प्रथम अध्याय

शोध-परिचय

अध्याय प्रथम
शोध परिचय

प्रस्तावना

भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। एक शिक्षक शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। अतः शिक्षा के उद्देश्य देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। जो समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के पूरक होते हैं। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थिति के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग का चयन करें और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयुक्त अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें।

शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों और शैक्षिक गतिविधियाँ क्रियाशील रहती हैं उसे राष्ट्र का निर्माता कहाँ जाता है किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का होता है। शाला की उन्नति अथवा विकास के लिए उचित पाठयक्रम, श्रेष्ठ पाठयपुस्तक, उत्तम शिक्षा साधन, तथा उपयुक्त शाला गृहों की आवश्यकता तो है, परंतु उससे कहीं अधिक आवश्यकता हैं उपयुक्त शिक्षकों की वे ही शिक्षा व्यवस्था को चलाते हैं।

बालकों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक ही वास्तव में बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास करता है। विद्यालयीन परिवेन में भी शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। संपूर्ण विद्यालयीन योजनाओं को शिक्षक ही व्यवहारिक रूप देता है। अच्छी से अच्छी शिक्षण पद्धति प्रभाव रहित हो जाती है यदि शिक्षक उसे सही ढंग से प्रयोग न करें।

शिक्षक व छात्र के मध्य अतः क्रिया द्वारा ही अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

शिक्षण प्रक्रिया की सफलता की सीमा का आधार शिक्षक व छात्र की प्रकृति है। इन दोनों की सम्मिलित योग्यताओं तथा क्षमताओं आदि का प्रभाव इस प्रक्रिया की सफलता को निर्धारित करता है। बालक जो कुछ सीखता है उसका प्रभाव जहां एक ओर उसकी अमूर्त शक्तियों पर पड़ता है वहीं उसका व्यवहार भी परिवर्तित होने लगता है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा छात्र को पाठ्यवस्तु ही स्थानांतरित नहीं की जाती अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ता है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों का प्रभावी मार्गदर्शन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है। उनके अच्छा गुण अधिरोपित करने का यथा शक्ति प्रयास करता है। और वही शिक्षक प्रभावी शिक्षक कहलाने योग्य है जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विषय वस्तु का विद्यार्थियों को अधिगम करा कर वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ उसमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने की क्षमता रखें।

परिपक्व शिक्षक ही छात्रों की आवश्कयताओं को जानकर उन्हें योग्य दिशा में लगाता है यहीं परिपक्वता शिक्षक को आदर्श शिक्षक बनाती है। जो शिक्षक जितना परिपक्व होगा उतना वह कार्यो से उत्पन्न तनाव को आसानी पूर्वक वहन कर पायेगा। यदि शिक्षक परिपक्व नहीं होगा तो वह कार्यों के बोझ तले दबता जायेगा और अध्यापन कार्य ठीक ढंग से नहीं कर पायेगा जिससे हमारी सामाजिक संरचना अस्त–व्यस्त हो सकती है।

1.1 शिक्षक के विषय में शिक्षाविद्ो के विचार

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार :– शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मार्गदर्शक है। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण करने में धुरी का कार्य करता हैं। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जनकर्ता है। वह बालक का ही मार्गदर्शन नहीं वरन संपूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।

रवीन्द्रनाथ टैगौर के अनुसार :– शिक्षक वह प्रकाश पुंज है जो स्वंय जलकर औरों को प्रकाशित करता है।

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार :– वास्तव में शिक्षक हमारे भाग्य–निर्माता है समाज अपने विनाश पर उनकी उपेक्षा कर सकता है।

प्रो. हुमायुं कबीर के अनुसार :– शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक होते है। वे ही पुनः निर्माण की कुंजी है।

गारफोर्थ के शब्दों में :– शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है समाज की परम्पराये नवयुवकों को ज्ञात होती है तथा वही नये एवं रचनात्मक उत्तरदायित्व छात्रों का सौंपता है।

शिक्षक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान है। कहाँ जाता है कि एक व्यक्ति हत्या करके एक जीवन का अंत करता है किंतु शिक्षक गलत शिक्षा देकर सम्पूर्ण परिवार की हत्या करता हैं तथा संपूर्ण राष्ट्र का अहित कर सकता है।

1.2 शिक्षकों के लिए विचार

कोठारी कमीशन के अध्यक्ष जे.एस. कोठारी ने शिक्षकों की स्थिति में सुधार करने के लिये कुछ विचार व्यक्त किये थे उनमें से कुछ निम्नलिखित है।

- भारत सरकार द्वारा विद्यालयों के शिक्षकों के न्यूनतम वेतन क्रम निश्चित किए जाने और राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों को अपनी परिस्थितियों के अनुकुल समान और उच्च वेतनमान स्वीकार करने में सहायता करनी चाहिए।
- सरकारी और गैर–सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन क्रमों में समानता के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए।
- शिक्षा संस्थाओं में शिक्षकों को कुशलता पूर्वक कार्य करने के लिए न्यूनतम सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षकों की अपनी व्यवसायिक उन्नति करने के लिए उपयुक्त सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षकों के लिए सरकारी गृह निर्माण योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों के सभी नागरिक अधिकारों का उपयोग करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।
- शिक्षकों में प्रचलित व्यक्तिगत ट्यूशनों की प्रथा को नियंत्रित किया जाना चाहिए।

1.3 शिक्षकों की वर्तमान अवस्था

शिक्षा प्रगतिशील राष्ट्र की रीढ़ है और शिक्षक शिक्षा पद्धति में प्रशंसनीय है। राष्ट्र की प्रगति उसके शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर होती है। अध्यापन व्यवसाय सभी व्यवसायों में उत्तम है। परन्तु भाग्य की विडम्बना है कि अध्यापन एक बहुत ही अनाकर्षक व्यवसाय बनता जा रहा है। है और प्राथमिक शिक्षक समाज में सम्मानीय स्थिति नही रखता। भारत में आज भी शिक्षक आर्थिक दृष्टि से निर्धन है। सामाजिक दृष्टि से उसका स्तर निम्न है व्यवसायिक दृष्टि से शिक्षक का कार्य कठोर परिश्रम करने का है।

व्यवसायिक स्थिति :– अध्यापन व्यवसाय अध्यापक के लिए किसी प्रकार का आकर्षण नहीं रखता क्योंकि कुछ दिनों की नौकरी के पश्चात शिक्षक देखता है की उसे प्रगति करने के अवसर नहीं मिल रहे, उसका कार्यभार असाधारण रूप से अधिक है। सेवा शर्ते दयनीय है और संस्थापकों की ओर उसे किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं हैं। जिससे शिक्षकों को अत्याधिक मानसिक तनाव सहन करना पड़ता है। शिक्षक को सप्ताह में 40 से 50 धण्टे शाला में कार्य करना पड़ता हैं। उन्हें सह–पाठ्यक्रम क्रियाओं को क्रियांवित भी करना होता है। शाला में अनुशासन बनाए रखना होता है और भी अनेक कर्तव्य निभाने की आशा शिक्षक से की जाती है। आकस्मिक स्थानांतरणों, अनुचित रूप से सेवामुक्ति, वेतन मिलने में देरी, पदोन्नति नहीं होना, छुट्टियाँ अस्वीकृत होना इत्यादि कारणों से शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य विनष्ठ हो जाता है। कभी–कभी पदोन्नति के कागजात अनेक वर्षो तक वैसे ही विचाराधीन पड़े रहते है, वह उच्च अधिकारियों तक नहीं पहुंचते तथा शिक्षक की रिपोर्ट जानबूझकर खराब कर दी जाती है। वर्तमान समय में सम्मानीय व्यवसाय अपमानजनक टिप्पणियाँ प्राप्त कर रहा है।

सामाजिक स्थिति :– प्राथमिक शिक्षक की समाज में स्थिति इतनी निम्न है कि उसे योग्य सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पाती। एक ही परिवार के दो भाईयों में एक डॉक्टर तथा दूसरा शिक्षक हो तो शिक्षक की तुलना में डॉक्टर को अधिक सम्मान दिया जाता है।

वर्तमान समय में व्यक्ति अपनी आमदनी से जाना जा रहा और आदर सम्मान प्राप्त कर रहा है शिक्षक के योगदान को समाज में उपेक्षा से देखा जाता है।

आर्थिक स्थिति :– प्राथमिक शाला शिक्षकों का आर्थिक स्तर संतोष जनक नहीं है। प्राथमिक शाला के शिक्षकों का आरंभिक वेतन काफी कम है। वर्तमान समय में सचिवालय या किसी शासकीय कार्यालय में कार्यरत चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के वेतन से कम वेतनमान प्राथमिक शाला के शिक्षक का है। यह शिक्षकों के लिये दयनीय स्थिति है।

1.4 शोध अध्ययन की आवश्यकता

संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की प्रक्रिया की श्रृंखला में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शासकीय स्तर पर शिक्षा की चाहे कितनी ही मनोहर योजना बना ली जाए किन्तु शिक्षक यदि उसे ठीक ढंग से क्रियान्वित न करें तो वह योजनाएँ कदापि सफल नहीं हो सकती। प्राथमिक स्तर पर विशेष ध्यान रखते हुये शिक्षा का संस्कार बालको पर करने की जिम्मेदारी शिक्षक पर ही होती है। छात्रों के सामने आवश्यक एक आदर्श होता है। शिक्षक ही शिक्षा का आधार स्तंभ है। शिक्षा के हर कार्य में वह नेतृत्व करता है। इसी

प्रकार शिक्षक को समाज नेतृत्व करने वाला समाज रचियता कहाँ जाता है।

महान दार्शनिक एवं विचारक **श्रीअरविंद घोष** ने भी शिक्षक के विषय में कहां है। "शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं जो संस्कारों की जड़ों में अपने ज्ञान की खाद देते है और अपने श्रम से सींच–सींच कर उन्हें महाप्राण शक्तियाँ बना देते हैं।"

उपरोक्त सभी कथन हमें इस ओर खींचते जा रहे है, की अध्यापन कार्य में शिक्षक की भूमिका सर्वश्रेष्ठ है। उसी पर संपूर्ण समाज व छात्रों का विश्वास है हमारे देश को अगर अच्छा जीवन पुनः कोई प्रदान कर सकता है तो वह शिक्षक ही है।

किंतु शिक्षक पर शिक्षा के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के कार्यों का बोझ बढ़ रहा है। शिक्षक कार्यों के बोझ तले दबता जा रहा है। कार्यो से उत्पन्न तनाव को आसानी पूर्वक दूर करने की परिपक्वता शिक्षक में नहीं होने से वह कार्यों को पूर्ण रूप से कार्यन्वित नहीं कर पा रहा है तथा तनावपूर्ण जीवन व्यतित कर कर रहा है। जिससे कई विपरीत परिणाम हो रहे है। इन्हीं तथ्यों को आधार मानकर शोधकर्ता ने **"प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता तथा कार्यो से उत्पन्न तनाव का अध्ययन"** इस विषय को लघुशोध प्रबंध हेतु चुना है।

1.5 शब्दों की व्यवहारिक व्याख्या

❖ शैक्षिक परिपक्वता

परिपक्वता शब्द पूर्णता को दर्शाता है शैक्षिक परिपक्वता का अर्थ शिक्षण प्रणाली में शिक्षक के द्वारा पूर्ण किया गया व्यवसायिक सेवा पूर्व एवं सेवा अंतर्गत प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है जिसमें शिक्षक अपने शैक्षणिक अनुभवों का एकत्रीकरण कर शैक्षिक उपलब्धि का उच्चतर स्तर पाता है।

सभी स्तरों पर प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के व्यवहार पर प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ रहा है। प्रशिक्षण उनकी व्यवसायिक दक्षता को बढ़ाने में सहायक हुआ है तथा सेवा से संबंधी आवश्यकताओं पर भी सकारात्मक रूप से प्रशिक्षण प्रभावकारी हुआ है।

❖ कार्यो से उत्पन्न तनाव

शिक्षक पाठशालाओं में देश का भविष्य ढ़ालते है। छात्रों को विविध प्रकार के ज्ञान के माध्यम से सिंचतें हैं। उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहते है। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षकों पर कई प्रकार के अशैक्षिक कार्यों का बोझ बढ़ता जा रहा है। अध्यापन कार्य साथ–साथ अन्य अतिरिक्त कार्य उदा. जनगणना, चुनावी कार्य, पल्स पोलियो, परिवार नियोजन की जानकारी देने का कार्य, साक्षरता तथा प्रौढ़ शिक्षा, आकस्मिक उत्पन्न बीमारियों तथा प्राकृतिक आपदाओं, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण इत्यादि कार्य शिक्षकों के द्वारा कराये जाते है।

अशैक्षिक कार्यो की अधिकता बावजूद उनसे अच्छे तथा शत प्रतिशत परिणामों कि आशा की जाती है। इत्यादि इस प्रकार के कार्यो से उत्पन्न तनाव से शिक्षकों की मानसिक तथा शारीरिक स्थिति पर उसका असर स्पष्ट रूप से होता है।

1.6 शोध के उद्देश्य

- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं उनके कार्यो से उत्पन्न तनाव के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य शैक्षिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- शासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं अशासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्यो से उत्पन्न तनाव का अध्ययन करना।
- शासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों के कार्यो से उत्पन्न तनाव एवं अशासकीय शालाओं में कार्यरत शिक्षकों के कार्यो से उत्पन्न तनाव का अध्ययन करना।

1.7 शोध की परिकल्पनाएँ

- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं उनके कार्यो से उत्पन्न तनाव के मध्य कोई संबंध नहीं होगा।
- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षकाओं की शैक्षिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।
- शासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं अशासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता के मध्य अंतर नहीं होगा।
- प्राथमिक शाला में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यो से उत्पन्न तनाव के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- शासकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों के कार्यो से उत्पन्न तनाव एंव अशसकीय शाला में कार्यरत शिक्षकों के कार्यों से उत्पन्न तनाव में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

1.8 शोध समस्या का सीमांकन

शोध में कई तथ्यों का विचार कर समय व सुविधा के लिए क्षेत्र का सीमांकन किया गया क्योंकि प्रदत्तों के संकलन हेतु विद्यालय समय के अनुसार कार्य करना आवश्यक है। शोध के उद्देश्य व क्षेत्र को निर्धारित करने हेतु सीमांकन अध्ययन को भ्रमित होने से बचाते है।

निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिये सीमित न्यादर्श का चयन किया गया।

- प्रस्तुत अध्ययन के लिये नागपूर जिले के दक्षिण नागपूर क्षेत्र का चयन किया गया है।
- दक्षिण नागपूर क्षेत्र के कुल 11 प्राथमिक शालाओं को समाविष्ठ किया गया उसमें 5 शासकीय तथा 6 अशासकीय शालाओं का समावेश किया गया।
- दक्षिण नागपूर क्षेत्र से 11 शालाओं के 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं तक ही अध्ययन सीमित रखा गया।

1.9 शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर – शैक्षिक परिपक्वता

आश्रित चर – कार्यो से उत्पन्न तनाव